मुरुदंग
कोन्ध जनजाति का एक संगीत यंत्र

Murudung
An Indigenous Khond musical percussion drum

परिचय

कोन्ध अथवा कन्ध नाम से जाने जाने वाली यह जनजाति ओडिशा के रायगढ़ जिले की पहाड़ियों में पायी जाने वाली प्रमुख जनजातियों में से एक है। यह जिला विभिन्न जनजातीय समुदायों एवं उपजातियों जो शिकारी अवस्था से लेकर झूम कृषि एवं स्थाई कृषि के विभिन्न स्तरों पर पाए जाते हैं, का गृह स्थल है। इनमे कोन्ध एक ऐसा जनजातीय समुदाय है जो दक्षिणी ओडिशा के रायगढ़ जिले में पूर्वी घाट पर बसता है। कोन्ध अथवा कन्ध जनजाति ओडिशा राज्य में बड़े पैमाने पर पायी जाती है। कोन्ध स्वयं को 'कुई' कहते है जो मूल रूप मे 'कुइंगा' है। इस जनजाति का संगीत बहुत लोकप्रिय एवं प्रकृति में देशज है जिसका प्रयोग वे विभिन्न अवसरों जैसे विवाह, धार्मिक उत्सव एवं भजन इत्यादि में आनंदित होने के लिए करते है। सामाजिक, सांस्कृतिक, देशज संगीत एवं देशज ज्ञान से जुड़े विभिन्न तथ्यों/ जानकारी देते इस प्रकार के संगीत यंत्र इनके सांस्कृतिक रूप में ढले होते है।

आरोहण क्रमांक/ Accession No.:
2009.78

संकलन स्थान/ Place of collection :
तमाडा, रायगढ़, ओडिशा/ Tamada, Rayagada, Odisha

Introduction

The Khonds or Kandha's constituted one of the principal aborigines of the hills of Rayagada district in Odisha. The district is a home land of various tribal communities along with their sub-tribes, who are predominantly found in different levels of development from hunter gatherers, shifting cultivators to settled peasantry. In which Khonds are one of the tribal community inhabited in the Eastern Ghats in Rayagada district of Southern Odisha. The Khond or Kandha is the largest tribe of the Odisha state in terms of population; Khonds call themselves 'Kui' which is "Kuinga" in the plural form. The music of Khond tribe is very popular and is an indigenous in nature, amused themselves in various ways particularly such as marriages, religious festivals, bhajans etc. This musical object offers a variety of detail facts i.e. socio, cultural, ethno-musical and indigenous knowledge of this tribe shaped by its cultural context.

वर्णन एवं महत्त्व

मृदा निर्मित यह ताल यंत्र दोनों सिरों से खुला एवं रंग बिरंगे धागों से लिपटा होता है जिसके दोनों सिरों को जानवर की चमड़ी / झिल्ली से ढका जाता है साथ ही संगीत हेतु इसी झिल्ली से निर्मित पतली पट्टियों से दोनों सिरों को बाँधा जाता है। मृदंग बनाने के लिए मिटटी की खोखली आकृति (आग में पकी हुई), हरे, लाल, नीले, पीले रंग के सूत के पतले धागे, जानवर का चमड़ा/ झिल्ली, चमड़े की पतली पट्टियाँ एवं एक छोटी रस्सी की आवश्यकता होती है। दो तरफा झिल्लियों वाला यह मृदंग मिटटी की खोखली ढोलनुमा आकृति से बना होता है जो रंग बिरंगे धागों की पतली परत से ढंका होता है साथ ही दोनों खुले सिरों पर झिल्ली लगी होती है। बेलनाकार यह यंत्र मध्य से अधिकतम हरड़ जैसा प्रतीत होता है। इसके दोनों सिरों पर चमड़े के छोटे छल्लों के सहारे पास पास पतली परन्तु मजबूत पट्टियाँ (चमड़े की) बाँधी जाती हैं। मृदंग बनाने की यह पूरी प्रक्रिया पूर्णतः देशज है जो इस ताल वाद्य की अनूठी विशेषता है।

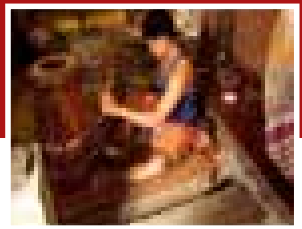
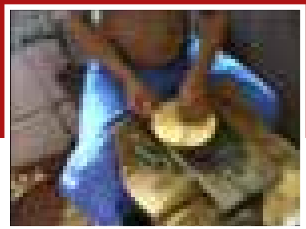
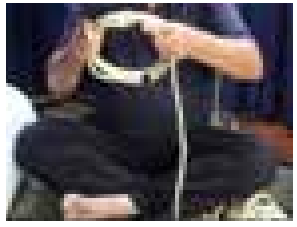

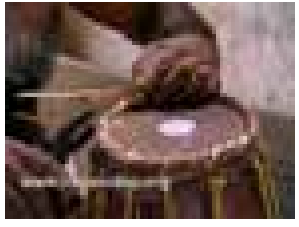
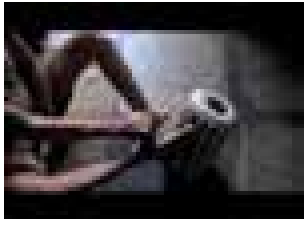

Description and Signification

The open ends of the clay percussion musical drum wrapped by colorful threads, covered by cow skin of both ends tighten by animal leather straps are beaten by hands through manipulate fingers to create musical sound. They clay body (fired), thin coloured cotton threads of green, red, blue and yellow, cow leather, straps and a small rope. It is a double sided membranous musical drum made of hollow clay body wrapped with a thin layer of colourful threads on its base covered by animal skin of both sides of the drum It is more barrel shape attains maximum diameter in the middle it seems like 'Myrobolan" shape. The open ends of the body are completely covered by the broad circular shape sheet of animal skin. The stretched skin is pept in position by trying it firmly with the skin covered circular rings fitted on the body at the close proximity of its opening ends. Thin but strong strap of a skin is again made to pass over the body, connecting the two opposite ends of the body. The straps are lying close to each other. In the entire process of making strictly followed by indigenous methods that is the unique feature of this musical drum.

कोन्ध जनजाति की सांस्कृतिक जनश्रुति / The Cultural Lore of Khonds

मृदंग शब्द संस्कृत के 'मृद' से लिया गया है जिसका अर्थ मिटटी है एवं 'अंग' का अर्थ शरीर है। संभवतः यह मिटटी का बना होगा। यह देशज कोन्ध संगीत यंत्र बहुत प्राचीन है जो सदियों से बजाया जा रहा है। यह ढोलनुमा यंत्र जीवन का प्रतीक है तो इसकी ताल समुदाय की हृदय गति को इंगित करती है। बुलंद पहाड़ी पर बसा यह गाँव पहाड़ियों एवं घने जंगल से घिरे प्रदेश के विहंगम दृश्य को प्रस्तुत करता है। वनस्पतियों पेड़-पौधों को काटकर जलाने के उपरांत की गई खेती यहाँ फसल उगाने के लिए मुख्यतः अपनाई जाती है जो 'दाही' अथवा 'झूम' कृषि कहलाती है। कृषि क्षेत्र, बड़े पैमाने पर बिखरी पहाड़ियां एवं विभिन्न परिवेश के बाद

सदाबहार रहते हुए इनका आर्थिक जीवन इन्हें समतल क्षेत्रों में रह रहे लोगो से अलग ला खड़ा करता है। नृत्य एवं संगीत के शौकीन कोन्ध अपने सामाजिक रिवाजों में गहन निष्ठा रखते है।

Murudung is derived from two Sanskrit words "Mrid" means clay and "Ang" means body, probably it was made of clay. This indigenous Khond musical drum is an ancient that has been enjoyed for many centuries, the drum is the sign of life, its beat is the heart beat of the community. The Khond tribal village, being situated on the top of a lofty hill, commands a panoramic view of the surrounding hilly country with its dense forest dotted with slash and burn cultivation is the chief method practice by the Khonds to grow crops it is called 'dahi' or Jhum cultivation. The agricultural fields and widely scattered hills and perennial winter bodies. Living in different surroundings, the economic life of the khonds became different from the people of the plains. They have great respect for their social customs, also fond of musical performance and dancing.